❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

द्युमन्तं शुष्ममाभर।

सामवेद 1325

हे शक्तिदायक प्रभो! हमें शुभ शक्ति दो।

O the Bestower of strength! Bistwo on us the strength that will bring glory.

वर्ष 40, अंक 18 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 फरवरी, 2017 से रविवार 5 मार्च, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया गया महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 193वां जन्मोत्सव : एक रिपोर्ट

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 193वें जन्मोत्सव पर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों ने अपने-अपने क्षेत्रों में भजन संध्या, प्रवचन, शोभायात्रा एवं ऋषि लंगर के आयोजन किये। आर्य समाज एल ब्लाक आनन्द विहार, हरी नगर, आर्य समाज ईस्ट ऑफ कैलाश, आर्य समाज करोल बाग, आर्य समाज गोविन्दपुरी, आर्य समाज शकूर बस्ती रानीबाग, एवं आर्य समाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी ने विशाल भव्य शोभा यात्रा निकाली व ऋषि लंगर का आयोजन किया। आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी ने 2500 लोगों को ऋषि लंगर कराया और वैदिक साहित्य का वितरण किया। इस वर्ष आर्य समाज सागरपुर के पदाधिकारियों के साथ श्री श्याम शर्मा (महापौर दक्षिण दिल्ली) श्री प्रद्युम्न राजपूत (पूर्व विधायक द्वारका दिल्ली क्षेत्र), श्री प्रवीण राजपूत (निगम पार्षद सागरपुर वार्ड) श्री महाबल मिश्रा (पूर्व सांसद पश्चिमी दिल्ली) के अथक प्रयासों से दिल्ली नगर निगम ने दिल्ली के तीन मार्गो मोती नगर, सागरपुर, बाली नगर का नामकरण आर्य समाज रोड व महर्षि दयानन्द के नाम से नामकरण किया व एक लॉनटेनिस स्पोर्ट कॉम्प्लैक्स का नाम महर्षि दयानन्द का नाम दिया है। आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी के सामने सी-3 ब्लाक के गेट का नाम निगम पार्षद श्रीमती रजनी ममतानी के सौजन्य से 'महर्षि दयानन्द द्वार' रखा गया।

इसी के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज सागरपुर के सहयोग से नगरवन पार्क सागरपुर में भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

आर्य समाज सागरपुर के कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्या सविता आर्या की सुमधुर वाणी में गायत्री मंत्र का भावार्थ साहित उच्चारण कर किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री श्याम शर्मा (महापौर, दक्षिण दिल्ली) एवं महाशय धर्मपाल जी (चेयरमैन एम.डी.एच.ग्रुप) ने कार्यक्रम में पधारकर कार्यक्रम की शोभा में चारचांद लगा दिये। अपार भीड़ में सभी के दिलों में महाशय धर्मपाल जी की एक झलक पाने की इच्छा समाई हुई थी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कविवर सुखलाल जी की कविता की पंक्तियों के माध्यम से अपनी बात को सबके सम्मुख रखते हुए आयोजकों का धन्यवाद व बधाई दी। महाशय धर्मपाल जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ''जब मैं पांच साल का था मेरे पिताजी मेरी उंगली पकड़ कर आर्य समाज ले जाते थे मैं 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सो खोवत है' भजन गाते हुए बड़ी मस्ती में उनके साथ जाता था।'' पूर्व सांसद श्री महाबल मिश्र ने कहा कि महर्षि दयानन्द हमेशा मेरे प्रेरणा स्रोत रहे हैं मैं उन्हीं के बताए मार्ग पर चलकर जनता की सेवा में तन-मन-धन से लगा रहता हूं। आज इस क्षेत्र में स्वामी जी का जन्मोत्सव मनाने के लिए मैं भाई सुखबीर जी व श्री विनय आर्य का हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

दिल्ली सभा महामंत्री श्री विनय आर्य ने जानकारी देते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के दिन दिल्ली नगर निगम ने दिल्ली के तीन प्रमुख मार्गों का नामकरण किया है जिसमें दो का नाम महर्षि दयानन्द मार्ग व एक का नाम आर्य समाज रोड रखा गया है साथ ही एक खेलपरिसर का नाम महर्षि दयानन्द खेल परिसर भी रखा गया है।

– शेष समाचार एवं चित्रमय झांकी पृष्ठ 4-5 एवं 7 पर

जन्मोत्सव समारोह में भजन प्रस्तुत करते श्री फनीश पंवार एवं साथी, श्री सन्दीप आर्य एवं साथी, एवं श्री बच्चू सिंह आर्य। समारोह में उपस्थित आर्य जन समुदाय

आर्य परिवार
होली मंगल मिलन समारोह
फाल्गुन पूर्णिमा विक्रमी सम्वत् 2073 तदनुसार रविवार 12 मार्च, 2017 सायं 3-30 से 7-15 बजे
स्थान : रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल,
राजाबाजार, कनॉट प्लेस (स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे), शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली-1
नवसस्येष्टि यज्ञ : 3-30 बजे
विशिष्ट संगीत एवं हास्य रंग की प्रस्तुति
बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम
पुष्पों द्वारा होली-मंगल मिलन एवं प्रीतिभोज : 7-15 बजे

वेद-स्वाध्याय

जीवन के दो मार्ग – भाग और अपवर्ग

ईजानश्चितमारुक्षदग्निं नाकस्य पृष्ठाद् दिवमुत्पतिष्यन्।
तस्मै प्रभाति नभसो ज्योतिषीमान् स्वर्गः पन्थाः सुकृते देवयानः।।–अथर्व. 18/4/14
ऋषिः **अथर्वा**।। देवता – **यमः**।। छन्दः **भुरिक्त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ–जो मनुष्य **नाकस्य पृष्ठात्** = सुखभोग के लोक से **दिवम्**= प्रकाशमय 'द्यौ' लोक के प्रति **उत्पतिष्यन्**= ऊपर उठना चाहता हुआ और इस प्रयोजन से **ईजानः**= वास्तविक यजन करता हुआ **चितं अग्निम्**= पुण्यकर्मों द्वारा चिनी हुई अग्नि का, आन्तर अग्नि का **आअरुक्षत्**= आश्रय ग्रहण करता है **तस्मै**=उसी **सुकृते**= शोभनकर्म करने वाले मनुष्य के लिए **ज्योतिषीमान्**=ज्योतिर्मय **स्वर्गः**= आत्मसुख को प्राप्त करने वाला **देवयानः पन्थाः**='देवयान' मार्ग **नभसः**=इस प्रकाश रहित संसार-आकाश के बीच में **प्रभाति**=प्रकाशित हो जाता है।

विनय – क्या तुम देवत्व पाना चाहते हो? उस प्रसिद्ध बड़ी महिमावाले 'देवयान' मार्ग के पथिक बनना चाहते हो? परन्तु शायद तुम उस देवों के चलने के मार्ग को अभी समझ ही न सकोगे। बात यह है कि संसार में दो मार्ग चल रहे हैं। एक मार्ग से संसार के लोग भोग में, प्रकृति में, प्रवृत्त हो रहे हैं–विश्व के एक–से–एक ऊँचे सुखभोग पाने के लिए दृढ़तापूर्वक अग्रसर हो रहे हैं। दूसरे मार्गवाले लोग भोगों से निवृत्त होकर अपवर्ग की ओर, आत्मा की ओर जा रहे हैं। ये क्रमशः पितृयाण और देवयान हैं। इन दोनों मार्गों द्वारा प्रकृति पुरुष के भोग और अपवर्ग नामक दोनों अर्थों को पूरा कर रही है, परन्तु प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों एक–साथ कैसे हो सकती हैं? इसलिए जो लोग भोगों में विश्वास रखते हुए मुँह उठाये उधर जा रहे हैं, उन्हें लाख समझाने पर भी वे आत्मा की बात नहीं सुनेंगे। देवयान मार्ग तो उन्हें ही भासता है जो भोगों की निःसारता को अच्छी प्रकार से समझ गये हैं, परम लुभावने बड़े–बड़े दिव्य भोगों को (जिनका हमें अभी कुछ पता भी नहीं है) देखकर जो उनसे भी ऐसे विरक्त हो चुके हैं कि वे अब संसार के सर्वश्रेष्ठ सुखभोग के इन्द्रासनों को छोड़कर ज्ञानस्वरूप तत्त्व की शरण पाने के लिए व्याकुल हो गये हैं–भोगों में अन्धकार–ही–अन्धकार पाकर अब वे ज्ञानमय लोक में चढ़ना चाहते हैं। यही मार्ग 'स्वः' को, आत्म–सुख को, आत्म–ज्योति को प्राप्त कराने वाला है। यदि तुममे अभी भोगलिप्सा शेष है तो तुम्हें अभी वह जगमगाता हुआ ज्योतिषीमान् मार्ग भी दिखाई नहीं दे सकता। जबकि संसार के लिए आकर्षक और प्रार्थनीय बड़े–बड़े स्वर्गिक भोग और दिव्य विभूतियों के भोग भी आत्महीनता के कारण तुम्हें बिल्कुल बेकार, निःसत्त्व लगेंगे और यह आत्मप्रकाशशून्य भोगदायक लोक अन्धकारमय दीखने लगेगा। तब उसी अँधेरे के बीच में सुवर्ण–रेखा की भाँति और फिर विद्युत्–लता की भाँति अन्त में चकाचौंध करने वाली, अनन्त सूर्यों के प्रकाश को भी मात करने वाली ज्योति की भाँति वह देवयान का दिव्य–प्रकाश तुम्हारे लिए उत्तरोत्तर बढ़ता जाएगा। तब भोगवादियों के लाख समझाने पर भी तुम्हें इन भोगों में राग पैदा नही होगा।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आदर्शों की तलाश मे भटकता युवा

जो राष्ट्र अपने महापुरुषों से मुंह मोड़ लेता है उस राष्ट्र का क्षरण कोई नहीं रोक सकता। इस बार विश्व पुस्तक मेले में सनी लियोनी के जीवन पर आधारित पुस्तक प्रसिद्ध प्रकाशकों के स्टाल पर बेची जा रही थी जो एक कलाकार से साथ पोर्न स्टार भी हैं। सनी के जीवन पर आधारित पुस्तक में उसकी सफलता की कहानी को युवा समाज के सामने परोसने का कार्य कुछ इस तरह हो रहा था मानो भावी भारत की निर्माता नई पीढ़ी के पास आदर्श सफल महापुरुषों की कमी हो और इस कमी की पूर्ति सनी लियोनी आदि से पूरी की जा सकती हो? उसे नवयुवतियों के सामने एक आदर्श के तौर पर पेश किया। मुझे पता नहीं चल पा रहा है कि 21वीं सदी में हमने सफलता की क्या परिभाषा गढ़ ली किन्तु जो भी गढ़ी वह आने वाली पीढ़ी के लिए या कहो इस राष्ट्र के लिए बिल्कुल भी शुभ संकेत नहीं है। जिस तरह आज हमारे पाठ्क्रम बदले जा रहे हैं उसे देखकर अहसास जरुर होता है कि शायद आने वाले वर्षों में नैतिक शिक्षा जैसे विषयों में भी सनी लियोनी जैसी कलाकार अपनी जगह बना ले तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

इस काम में देश के युवाओं का मार्गदर्शन जहाँ मीडिया आदि को करना था वहां इसके उलट कार्य होता दिख रहा है। मसलन अमूल घी का विज्ञापन दिन में एक बार और पेप्सी कोक आदि का दस बार आएगा तो वे युवा अमूल घी नहीं पेप्सी कोक को ही अपने स्वास्थ्य के लिए सही समझेगा! यह बात सर्वविदित है कि वर्तमान समय में हम जिस भारत में बैठे हैं उसका निर्माण हमने नहीं किया। इसके निर्माण के पीछे असंख्य क्रांतिकारियों, महर्षि दयानन्द जैसे धर्म और समाज सुधारकों, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे बलिदानियों और देश के अन्य महापुरुषों का त्याग है। लेकिन क्या हम आज इन्हें भुलाकर फिल्मी पर्दो के हीरो और तथाकथित धर्मगुरुओं से इनकी पूर्ति करना चाह रहे हैं?

हम धीरे–धीरे अपने आदर्श मिटा रहे हैं। भारतीय नारी तो ऐसी होती थीं जो महापुरुषों को भी पुत्र के रूप में प्राप्त कर लेती थीं। हमारा इतिहास आदर्श नारियों से भरा है। अपने स्कूलों के दिनों की याद आते ही, उस समय हमारे पाठ्यपुस्तक में कहानी के रूप में दिया गया महापुरुषों के जीवनी पर आधारित लेख पर ध्यान चला जाता है। झाँसी की रानी, रानी सारन्धा, सुभाष चन्द्र बोस, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, महर्षि दयानन्द आदि के जीवन–कथा और उनके राजनीतिक और दार्शनिक उपलब्धियों के बयान उन दिनों के शिक्षक काफी लगन के साथ विद्यार्थियों के सामने पेश करते थे। वास्तव में, उस समय, देश में नायक के रूप में, ऐसे ही व्यक्तित्व का पूजन होता था। एक आध बार फिल्मी हीरो या मशहूर खिलाड़ी को लेकर तो आम बैठक में चर्चा जरूर हो जाती थी, लेकिन कभी भी उन्हें महापुरुषों का दर्जा देना तो दूर, बराबरी की कल्पना भी नहीं की जाती थी। बल्कि उन महापुरुषों की जीवन–शैली तथा देश और देशवासियों के प्रति अपार प्रेम हमेशा ही बच्चों के लिए मार्गदर्शन का काम करता था।

अब मीडिया द्वारा परोसे जा रहे नये महापुरुष यानी अवतार के रूप में फिल्मी सितारें और क्रिकेट खिलाड़ियों का आगमन उन महापुरुषों की विदाई का रास्ता साफ कर रहे हैं। आजकल के नौजवानों के लिए इन जगमगाते महापुरुषों से लगाव गत जमाने के अपने देशभक्ति और आदर्श के लिए पहचाने वाले लोगों से काफी अधिक हैं। आधुनिक समाज में इनके प्रभाव को अनदेखा नहीं किया जा सकता। कहीं ये नई संस्कृति का जन्म तो नहीं? यदि हाँ तो इस जन्म के परिणाम ही कितने खतरनाक होंगे। अभी से समाचार पत्रों में पढ़कर पता लगाया जा सकता है, एक समय था जब पंजाब केसरी अखबार के गुरुवार के रंगीन पेज को भी अधिकतर बच्चों से छिपा दिया जाता था। लेकिन बदलते समय में आज छोटे बच्चों के हाथ में मोबाइल और उसमें खराब फिल्में आसानी से मिल जाएगीं। सोचिये आने वाले देश के भविष्य का चरित्र कैसा होगा!

एक बच्चे का निर्माण विद्यालयों में, परिवारों में, बच्चों की परवरिश का ढंग ही निर्धारित करता है। समाज में बुनियादी तौर पर परिवार और उसके पूरक के रूप में विद्यालय ही अच्छे नागरिक बनाने का काम करते हैं। छोटे बच्चे तो कच्ची मिट्टी के गोले जैसे हैं, जैसे एक कुम्हार अपने कलाकृतियों के सहारे उससे मूर्तियां बनाते हैं, उसी तरह समाज के इन प्रतिष्ठानों को ही नागरिक बनाने की जिम्मेदारी दी गई है। लेकिन आज कालेज–स्कूल राजनीति और फूहड़ता के अड्डे बनते जा रहे हैं। न शिक्षा बची, न ढंग के शिक्षक। यदि कुछ शिक्षक हैं भी तो जो विद्यादान और संस्कारों के जरिये मानवता का पाठ पढ़ाकर अच्छे नागरिक बनाने का सपना देखते हैं पर फिर भी यह उनका सपना ही रह जाता है। कारण बाहरी दुनिया में नायक के रूप में शाहरुख खान भगत सिंह से ज्यादा अहमियत रखता है और लक्ष्मीबाई से सनी लियोनी कहीं अधिक लोकप्रिय बन गयी। आधुनिक फिल्मी हीरो की नकली फाईटिंग के सामने तो महाराणा प्रताप, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, शिवाजी महाराज की वीरता बौनी ही लगती है। हम केवल एक शानदार परम्परा को ही नहीं भूल रहे बल्कि अपना इतिहास भी मिटा रहे हैं हालाँकि कुछ लोग कहते हैं कि हम सिर्फ अतीत की जुगाली करके आगे नहीं बढ़ सकते पर हम अतीत से वह प्रेरणा ले सकते हैं जो हमारे हर कदम को मजबूत बनाने के लिए मदद करती है। दुनिया में कोई भी देश या जाति ने अपनी परम्परा भूलकर दूसरों की नकल करके प्रगति नहीं की। यदि की तो उसका इतिहास तो बचा पर संस्कृति और भूगोल दिखाई नहीं दिया! यदि आज युवा इन आधुनिक अभिनेता/अभिनेत्रियों को अपना आदर्श समझने लगे तो युवाओं के साथ–साथ समाज और राष्ट्र का भी क्षरण होगा।

–सम्पादकीय

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• **प्रचार संस्करण** (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• **विशेष संस्करण** (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• **स्थूलाक्षर सजिल्द** 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

बटवारे के अड्डे बनते शिक्षण संस्थान

....अक्सर देश के राजनेता देश-विदेश की क्रांतियों के उदाहरण देते हुए कहते हैं कि राजनीतिक बदलाव के लिए जागरूक और पढ़े लिखे युवाओं को आगे आना होगा। उदहारण अपनी जगह सही भी है किन्तु यहाँ तो देश तोड़ने, बाँटने जैसे मुद्दे लेकर युवा आगे आ रहे हैं और विडम्बना देखिये देश के उच्च स्तर के राजनेता इन्हें इस कार्य के लिए नमन कर रहे हैं .....

ज्यादा पुरानी बात नहीं है सब जानते हैं 1947 में देश के बटवारे की नींव अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय में रखी गयी थी। आज यह फसल जेएनयू में सिंचती नजर आ रही है। पिछले वर्ष उमर खालिद और कन्हैया कुमार की अगुवाई में जेएनयू में हुई राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के खिलाफ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्य समाज ने दिल्ली में दर्जनों से ज्यादा जगह धरना प्रदर्शन कर दोषी लोगों के खिलाफ कार्रवाही की मांग की थी। क्योंकि आर्य समाज गुलामी की पीड़ा समझता है, राष्ट्र के साथ-साथ आर्य समाज ने भी बटवारे का दंश झेला था। सैंकड़ों कुरबानियों के साथ आर्य समाज ने आजादी का वह मूल्य चुकाया था जिसे इतिहास कभी नहीं भुला सकता पर क्या ऐसे सभी मामलों में आर्य समाज को हर बार धरना प्रदर्शन करना पड़ेगा? जब देश स्वतंत्र है। एक लोकतान्त्रिक तरीकों से चुनी सरकार है तो सरकार अपने दायित्व की पूर्ति करे क्या संविधान में राष्ट्र विरोध के लिए कोई सजा का प्रावधान नहीं है? जो इस तरह खुलेआम अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर राजद्रोह हो रहा है।

विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समय होता है। इस काल में विद्यार्थी जिन विषयों का अध्ययन करता है अथवा जिन नैतिक मूल्यों को वह आत्मसात् करता है वही जीवन मूल्य उसके और किसी राष्ट्र के भविष्य निर्माण का आधार बनते हैं। लेकिन आज के इन शिक्षण संस्थाओं में देखें तो कुछेक छात्रों द्वारा बाकी के छात्रों के भविष्य को किसी मोमबत्ती की तरह दोनों ओर से आग लगाने का कार्य हो रहा है। फिर खबर है कि जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में राष्ट्रविरोधी गतिविधियों से ऊपजी अस्थिरता के बाद अब डीयू में भी इस तरह की कोशिशें शुरू हो गई हैं। जेएनयू के बाद अब विचारधारा की लड़ाई डीयू तक पहुंच गई है। रामजस कॉलेज विवाद अब पूरी तरह राजनीतिक रंग ले चुका है और इसको लेकर अब डीयू के शिक्षक भी लामबंद हो गए हैं। क्या ऐसे में कोई बता सकता है कि देश के लोगों की मेहनत के टैक्स से चलने वाले यह शिक्षण संस्थान शिक्षा के केंद्र हैं या राजनीति और देशविरोधी गतिविधियों के अड्डे?

डीयू में ऐसा पहली बार हुआ है कि छात्रों के बीच की लड़ाई शिक्षकों की लड़ाई बन गई है, क्योंकि इसमें एक तरफ जहां वामपंथी शिक्षक संघ डेमोक्रेटिक टीचर्स फ्रंट के कई पदाधिकारी लोगों को आमंत्रित कर रहे हैं वहीं भाजपा समर्थित शिक्षक संघ नेशनल डेमोक्रेटिक टीचर्स फ्रंट सहित राष्ट्रवादी शिक्षक संघ ने भी मोर्चा खोल दिया है। ऐसे में राष्ट्र के शुभचिंतकों के सामने प्रश्न यह उपजता है कि डीयू हो या जेएनयू या फिर अन्य शिक्षण संस्थान इसमें पढ़ाने वाले शिक्षकों को वेतनमान किस कार्य के लिए दिया जाता है और पढ़ने वाले छात्रों को किस कार्य के लिए छात्रवृति प्रदान की जा रही है? यदि राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में संलिप्त रहने और उन्हें समर्थन करने के लिए तो फिर आतंकवाद, नक्सलवाद के अड्डों और इन शिक्षण संस्थानों में अंतर क्या है? आखिर क्यों कुछ चुनिन्दा छात्रों और अध्यापकों को इन शिक्षण संस्थानों से बाहर का रास्ता नहीं दिखाया जा रहा है? क्यों इस संस्थानों में राष्ट्र के टुकड़े करने और बटवारे का पाठ पढाया जा रहा है?

यदि सत्ता के शिखर पर बैठे लोग गलतियाँ करें तो विपक्ष को ईमानदारी से उन मुद्दों को उठाना चाहिए लेकिन देशद्रोह जैसे मुद्दों पर सरकार और विपक्ष एक मत होने के बजाय राजनीति करने लगे तो देश का दुर्भाग्य ही कहलाया जायेगा। हो सकता है सक्रिय राजनीति में जाने का रास्ता स्कूल-कालेज से होकर जाता हो लेकिन जरूरी है कि दायरे में रहकर हो। विद्यार्थी जीवन में राजनीति करें, और यह राजनीति शिक्षा की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अत: जहाँ वह निवास करता है उसके आस-पास होने वाली घटनाओं के प्रभाव से वह स्वयं को अलग नहीं रख सकता है। उस राष्ट्र की राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक परिस्थितियाँ उसके जीवन पर प्रभाव डालती हैं। सामान्य तौर पर लोगों की यह धारणा है कि विद्यार्थी जीवन में राजनीति का समावेश नहीं होना चाहिए।

अक्सर देश के राजनेता देश-विदेश की क्रांतियों के उदाहरण देते हुए कहते हैं कि राजनीतिक बदलाव के लिए जागरूक और पढ़े लिखे युवाओं को आगे आना होगा। उदाहरण अपनी जगह सही भी है किन्तु यहाँ तो देश तोड़ने, बाँटने जैसे मुद्दे लेकर युवा आगे आ रहे हैं और विडम्बना देखिये। देश के उच्च स्तर के राजनेता इन्हें इस कार्य के लिए नमन कर रहे हैं। हम मानते हैं कि एक वक्त था, जब देश में राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, वीपी सिंह आदि ने राष्ट्र हितों का हवाला देकर छात्र शक्ति को जागृत किया था और लोकतांत्रिक अधिकारों के संरक्षण के साथ-साथ सत्ता परिवर्तन और खराब व्यवस्थाओं को बदलने का महत्त्वपूर्ण काम किया था लेकिन उनके लिए सर्वोच राष्ट्र हित था न कि आधुनिक छात्र नेताओं की तरह राष्ट्र विखंडन।

युवाओं को देश का भविष्य कहा जाता है। परन्तु जब वर्तमान में युवा ही दिशाहीन और दशाहीन होंगे तो देश का भविष्य कैसे सुधरेगा? ध्यान से देखने पर हम यह भी पाते हैं कि सोशल मीडिया के जरिये खुद को अभिव्यक्त करने वाली यह युवा पीढ़ी शिक्षा और रोजगार जैसे स्थायी मुद्दों को लेकर नहीं, बल्कि देश की नींव को बर्बाद करने वाले मुद्दों को ज्यादा तरजीह देती नजर आ रही है। शायद इसकी एक बड़ी वजह यह है कि आज देश के ज्यादातर विश्वविद्यालयों में छात्र नेता खुद अराजकता के प्रतीक बन गए हैं और वे स्थापित राजनीतिक दलों के हाथों की कठपुतली की तरह काम कर रहे हैं। इस कारण विश्वविद्यालयों से बाहर आने पर उन्हें स्थापित दलों का चुनावी टिकट तो मिल जाता है, लेकिन उन्हें जनता का जरा भी समर्थन हासिल नहीं हो पाता है। जरूरत छात्रसंघों की राजनीति को रचनात्मक स्वरूप देने की है न कि उन्हें विभिन्न राजनीतिक दलों के हाथों कठपुतली बनने की। साफ है कि छात्रसंघ यदि सियासत के मोहरे बनना बंद कर दें तो वे देश और जनता के सामने एक नया एजेंडा और उम्मीद पेश कर सकते हैं और तभी उनके नेताओं को लेकर जनता के मन में कोई सम्मान और आस जग पाएगी। आज सरकार को देखना चाहिए कि यह आम छात्र है या खास जाति के लोग ऐसा कर रहे हैं या कुछ लोग उनको साधन बनाकर आगे बढ़ा रहे हैं। ये तत्व कौन से हैं। इनका उद्देश्य क्या है? ये घटनाएं महत्त्वपूर्ण और गंभीर हैं। इन पर सरकार को संज्ञान लेना आवश्यक है।

-राजीव चौधरी

बोध कथा

प्रभु जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं

एक राजा अपने मंत्री के साथ पर्यटन तथा शिकार के लिए जंगल में निकल गया। चलते-चलते काँटोंवाली झाड़ी में राजा का वस्त्र उलझ गया। हाथ से वस्त्र को बचाने का यत्न किया, तो उँगली में बड़ा घाव आ गया। रक्त बहने लगा-वज़ीर ने पट्टी बाँधते हुए कहा-''कोई बात नहीं, प्रभु जो करते हैं अच्छा ही करते हैं।''

यह बात सुनकर राजा को क्रोध आ गया-अरे! मेरी तो उँगली कट गई, इतना रक्त बह गया, पीड़ा तंग कर रही है और यह कैसा मंत्री है जो कह रहा है कि प्रभु जो करता है, अच्छा करता है? मैं तो ऐसे मंत्री के बिना ही अच्छा हूँ।

''मंत्री, आप कृपया जाइये। मैं ऐसे साथ से अकेला ही अच्छा।''

मंत्री ने उत्तर में कहा-''जो आज्ञा आपकी, मैं अपना रास्ता लेता हूँ।''

राजा अकेला ही चल पड़ा। चलते-चलते राजा दूसरे राजा के राज्य में जा पहुँचा। वहाँ उस दिन देवी पर मनुष्यों की बलि चढ़ाई जाने वाली थी। सिपाही किसी पुरुष की तलाश में थे। खोजते-खोजते सिपाहियों की दृष्टि राजा पर पड़ी-सुन्दर है, शरीर अच्छा है, देवी इसकी बलि से बहुत प्रसन्न होगी। राजा को सिपाही मन्दिर में ले गये।

बलि चढ़ाने से पूर्व जब राजा को स्नान कराया जाने लगा, तो पुजारी की आँखों ने राजा की कटी उँगली को देखा और पुकार उठा-''अरे! यह तो अंग-भंग है! इसकी बलि नहीं चढ़ाई जा सकती।''

राजा को छोड़ दिया गया। राजा अपनी नगरी की ओर आ रहा था। विचार भी कर रहा था कि मंत्री ने ठीक ही तो कहा था कि प्रभु जो करते हैं, हमारे कल्याण के लिए ही करते हैं। यदि हाथ पर घाव न आ गया होता तो आज यमदूत ले ही गये थे। इस घाव ने ही बचा लिया। ऐसे मंत्री का तो मान होना चाहिए, न कि उसे दण्ड मिलना चाहिए। नगरी में पहुंचने से पूर्व राजा मंत्री की खोज करने लगे। वहाँ एक नन्ही-सी कुटिया में मंत्री को बैठे देखा तो उसे अपने साथ लेकर राजा अपनी नगरी में जा पहुंचा।

राजा ने मंत्री से कहा-''आपने तो मेरी उँगली कटने पर बड़े पते की और मर्म की बात कही थी। मैं ही अल्प-बुद्धि समझ न पाया। इसी घाव के कारण मैं मौत के मुँह से निकल आया हूँ, परन्तु मेरे अचदे मंत्री! यह तो बताओ कि मेरे घायल होने मे तो भला हुआ, परन्तु मैंने आप-जैसे तत्त्वदर्शी का जो अपमान किया और आपको निकाल दिया, इसमें प्रभु ने आपकी कौन-सी भलाई देखी?''

मंत्री ने मुस्कराते हुए कहा-''यह तो और भी अधिक अच्छा हुआ। यदि आप मुझे दुत्कार न देते, तो मैंने आपके साथ ही रहना था। तब सिपाही मुझे भी पकड़कर ले जाते। आप तो घायल होने के कारण छूट जाते, परन्तु मैं तो अंग-भंग नहीं था। तब वह मेरी ही बलि चढ़ा देते। मेरे ऊपर तो प्रभु ने विशेष कृपा की कि ज़ख़्मी भी न किया और मृत्यु का ग्रास बनने से भी बचा लिया, इसलिए यही कहना उचित है कि प्रभु जो करते हैं, हमारे कल्याण के ही लिए करते हैं। राजन्! हमारी दृष्टि छोटी है, प्रभु की आँखें बहुत दूर तक देखती हैं।''

तुम्हरी चाही में प्रभो, है मेरा कल्याण।
मेरी चाही मत करो, मैं मूरख नादान।।

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

इस नाम करण में आर्य समाज सागरपुर के पदाधिकारियों की विशेष भूमिका रही। कार्यक्रम में पधारे श्री श्याम शर्मा महापौर दक्षिण दिल्ली नगर निगम, आशा प्रवीन राजपूत पार्षद(निगम पार्षद, सागरपुर वार्ड), प्रद्युमन राजपूत पूर्व विधायक ने सभी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों को धन्यवाद दिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य समाज को समर्पित वरिष्ठ समाज सेवी श्री ओम प्रकाश घई, श्रीमती शकुन्तला सोनी, श्री प्रीतम सिंह, श्रीमती प्रतिमा देवी, श्री भगवान दास, श्री यज्ञमुनि जी वानप्रस्थी, श्री सुरेश यादव (भारत

- शेष पृष्ठ 7 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजत जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर यज्ञ सम्पन्न कराती यज्ञ ब्रह्मा आचार्या सविता जी एवं सम्मलित यज्ञमान परिवार।

भजनोपदेश श्री सन्दीप आर्य जी एवं ढोलकवादक श्री रहीश का स्वागत करते सभा मन्त्री श्री सुरेन्द्र आर्य जी एवं श्री सुखबीर सिंह आर्य जी

भजनोपदेश श्री फनीश पंवार टीम का स्वागत करते श्री योगेश आर्य जी, सभा उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान एवं श्री एस. पी. सिंह। आशीर्वाद देते महाशय धर्मपाल जी, मेयर श्री श्याम शर्मा का स्वागत करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं निगमपार्षद श्री प्रवीण राजपूर का स्वागत करते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य।

पश्चिम दिल्ली के क्षेत्र के वरिष्ठ आर्यजनों एवं कार्यकर्त्ताओं - श्री प्रीतम सिंह आर्य (आर्यसमाज पालम), श्री भगवानदास जी (नांगलराया), श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता जी (मोहन गार्डन), श्री सुरेश यादव जी (सागरपुर), श्रीमती प्रतिमा आर्या जी (सागरपुर), श्रीमती शकुन्तला देवी जी (सागरपुर), मा. सेवाराम आर्य जी (नजफगढ़), श्रीमती किरण देवी जी (शाहबाद मुहम्मदपुर) एवं श्री ओ. पी. घई जी (विकासपुरी डी ब्लाक) का सम्मान करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, सभा मन्त्री श्री सुरेन्द्र आर्य, सभा उप प्रधान शिव कुमार मदान, सभा उप प्रधान ओम प्रकाश आर्य, केन्द्रीय सभा के उप प्रधान राजेन्द्र दुर्गा, सभा मन्त्री वीरेन्द्र सरदाना, सभा कोषाध्यक्ष विद्यामित्र ठुकराल, सभा मन्त्री अरुण प्रकाश वर्मा, महाशय धर्मपाल जी एवं पूर्व सांसाद श्री महाबल मिश्रा।

समारोह में पधारने पर आर्यसमाज सागरपुर की ओर से महाशय धर्मपाल जी का अभिनन्दन एवं सभा की ओर से आर्यसमाज सागरपुर के अधिकारियों का सम्मान

आर्य समाज उत्तरी पश्चिमी दिल्ली द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस पर विशाल शोभा यात्रा

आर्य समाज उत्तरी पश्चिमी दिल्ली द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 19 फरवरी 2017 को विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया जो प्रातः 10:30 बजे आर्य समाज सरस्वती विहार से आरम्भ होकर 12 बजे सैनिक विहार आर्य समाज होते हुए , 12:30 पर स्वामी दयानन्द चौक(संत नगर रानी बाग) होते हुए मुख्य बाजार से गुजरते हुए आर्य समाज रानी बाग, आर्य समाज रेलवे रोड, महिंद्रा पार्क एवं 2:30 बजे आर्य समाज सन्देश विहार में समाप्त हुई। जगह जगह पर शोभा यात्रा का क्षेत्र के निवासियों ने, सैनिक विहार आर डब्लू ने एवं बाजार के दुकानदारों ने भव्य स्वागत किया। सभी आर्य समाजों ने प्रीति भोज कराया एवं आर्य समाज सन्देश विहार की तरफ से सभी के लिए ऋषिलंगर की व्यस्था की गयी थी। शोभा यात्रा का नेतृत्व सुरेन्द्र आर्य, प्रधान वेद प्रचार मंडल उत्तरी पश्चिमी दिल्ली, श्री जोगिन्दर खट्टर महामन्त्री वेद प्रचार मंडल उत्तरी पश्चिम दिल्ली ने किया। स्वामी माधवानंद जी, तपस्वी सुखदेव जी, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, सतीश चड्डा, ओम प्रकाश आर्य, अरुण वर्मा सभा कोषाध्यक्ष, यज्ञ दत्त आर्य, विनेश पपनेजा प्रधान रानी बाग मार्केट, श्री देवराज अरोरा निगम पार्षद, रोशन लाल आहूजा, शशि जेटली, दुर्गेश आर्य सुरेंद्र चौधरी, वृतपाल भगत, विरेंद्र आर्य एसीपी सतीश आहूजा, वरिष्ठ अधिवक्ता किशनचंद पाहुजा, विनोद कालरा जी की गरिमामयी उपस्तिथि रही, आर्य वीरों, वीरांगनाओं और बहुत बड़ी संख्या में आर्य बंधुओं ने भाग लिया।

दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों द्वारा लगाए गए ऋषि लंगर स्टाल

आर्यसमाज ईस्ट आफ कैलाश

आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक हरि नगर

आर्यसमाज गोविन्दपुरी

आर्यसमाज कीर्ति नगर

आर्यसमाज करोल बाग

चलो केरल! चलो केरल!! केरल चलो!!!

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत दिल्ली सभा के सहयोग से

महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउण्डेशन, कोझिकोड (केरल) के

नवनिर्मित परिसर का उद्घाटन एवं दक्षिण भारतीय वैदिक सम्मेलन

1-2 अप्रैल, 2017 (शनिवार एवं रविवार)

सान्निध्य
आचार्य एम. आर. राजेश
अध्यक्ष, कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन

उद्घाटन
महाशय धर्मपाल
चेयरमैन, एम.डी.एच

अध्यक्षता
श्री सुरेशचन्द्र आर्य
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

समारोह में भाग लेने के इच्छुक आर्यजन अभी से अपनी रेल/हवाई टिकटें अभी से आरक्षित करवा लेवें। कोझिकोड (कालीकट) केरल के लिए हवाई सेवाएं एवं रेल सेवा - राजधानी एवं अन्य रेलगाड़ियां उपलब्ध हैं। साधारण आवास - धर्मशाला/गैस्ट हाउस सुविधा एवं भोजन निःशुल्क है। एसी 2 स्टार होटल लगभग 1000/- रुपये प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के हिसाब से मिलते हैं। एक कमरे में दो व्यक्तियों को ठहराया जाएगा। कृपया अपनी टिकट की प्रति श्री सन्दीप आर्य जी को ईमेल- daps.sandeeparya@gmail.com या व्हाट्एप्प द्वारा 9650183339 पर तत्काल भेज देवें, ताकि उचित व्यवस्था की जा सके। यात्रा सम्बन्धी और अधिक जानकारी के लिए श्री एस. पी. सिंह जी (मो. 9540040324) अथवा श्री वीरेन्द्र सरदाना जी (मो. 9911140756, 9540944958) से सम्पर्क करें।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर समारोह को सफल बनाएं एवं समारोह के साक्षी बनें

निवेदक

प्रकाश आर्य (मन्त्री), डॉ. राधाकृष्ण वर्मा (उप प्रधान) — सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य (प्रधान), विनय आर्य (महामन्त्री) — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

विवेक शिनॉय (संयोजक) — कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन, कालीकट

Glimpses of the Yajur Veda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Rise, O Downtrodden

"Rise O downtrodden, an elevated position has been reserved for you. I will purify your polluted body with pure and clean water, I will strengthen and purify your distressed mind by the force of truth; I will invigorate your soul with austerity. I pure one, I transform you well with pure rays of the sun in form of the day", inspires a social worker.

"Lack of faith is the root cause of your miserable status. Remember, the light of confidence and true knowledge are more powerful than the rays of hundreds of suns. Bathe in the water of love. Be illumined by the splendour of the soul. Arouse the invisible mind, intellect and soul. The invisible always shapes and influences the visible ones. I impart sweetness to you. Be manifested with the effulgence of the self. Regain its innate splendour. Feel the presence of Almighty God everywhere so that you do not fall a prey to sinful thoughts and actions".

व्रेशीनां त्वा पत्मन्नधूनोमि कुकूननानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि।
भन्दनानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि मदिन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि।
मधुन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि शुक्रं त्वा शुक्रऽआधूनोम्यह्नो रूपे सूर्यस्य रश्मिषु।

(Yv.VIII.48)

Vresinam tva patmanna dhunomi, kukunananam tva patmanna dhunomi, bhandananam tva aptmanna dhunomi, madintama nam tva patmanna dhunomi, madhuntamanam tva patmanna dhunomi, sukram tva sukra adhunomyahno rupe suryasya rasmisu..

You give Me, I will give You

Any business done by temptation and treachery never remains permanent. The buyer and the seller, the beneficiary and the donor, each should offer their share and sacrifice to some extent as per ability. Each should put forward his Ahuti or oblation to the other. The success of business is verily founded on faith, credibility and mutual exchange.

"You hold me ever and I will hold you ever. I am collecting not for me alone. I am also collecting for you. May I get happiness in each dealing", says the verse. Such a just and honest dealing is known as 'svaha' or 'Noble Ahuti'.

Look at the busines between the soul and the body. The soul imparts desire and inspiration to the body and puts life in it. The body provides activities and efficiency for the soul. The soul and the body are respectiely known as the invalid and the blind. The co-opertion of these two is really heart touching. The invalid cannot work and the blind cannot see. During a journey, the invalid sits on the shoulders of the blind and shows the way. The blind keeps on walking. Thus the journey becomes easy and fruitful. So it is said that the body and the soul live their lives with faith, love and mutual understanding.

देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे। निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा। (Yv.III.50)

Dehi me dadami te ni me dhehi ni te dadhe.
niharam ca harasi me niharam niharani te svaha..

Be not cruel like a snake or tiger.

"Be not like a snake, be not like a tiger, May you move onwards on the path of simplicity and piety. May streams of purified butter sanctify your path of righteousness", says the verse.

The snake is the symbol of crookednes and dishonesty. Man who follows the snake becomes evil-minded. The tiger is the symbol of cruelty. He is happy to cause sufferings to others. Man behaving like the tiger becomes a cause of pains to others. Therefore persons who follow the snake and the tiger spread violence and cruelty in human society. O man, you have got the human body to distribute nectar to the world. Simplicity is nectar; nonviolence is nectar. The body other than that of a man is born only for enjoyment. It is unsuitable for sacrifice. It is seen that children of passionate parents become addicted to vices and lust. Anger grows when the sensuous desire of passion is unfulfilled. From the behaviour of snake is born the nature of tiger. The cruel person before injuring others injures his own heart. O man! you are born not to be cruel or violent out to be simple, kind and ever joyous.

माहिर्भूमा पृदाकुर्नमस्तऽआतानानर्वा प्रेहि। घृतस्य कुल्याऽउपऽऋतस्य पथ्याऽअनु।

(Yv.VI.12)

Mahirbhuma pradakur namasta atananarva prehi.

ghrtasya kulya 'up' rtasya pathya 'anyu.

To be Conti....

Contact No. 09437053732

वामपंथ के लालगढ़ JNU में स्वामी दयानन्द जयंती सम्पन्न

21 फरवरी, 2017 स्वामी दयानंद का 193वां जन्मदिवस होने के साथ-साथ आर्यसमाज के लिए भी महत्त्वपूर्ण दिवस कहा जायेगा। इस दिन JNU जवाहरलाल यूनिवर्सिटी, दिल्ली के इतिहास में प्रथम बार स्वामी दयानंद और उनके भारतीय समाज को योगदान विषय पर संस्कृत विभाग में व्याख्यान माला संपन्न हुई। JNU मुख्य रूप से साम्यवादी मानसिकता वाले अध्यापकों और छात्रों के रूप में प्रसिद्ध हैं। ऐसे में स्वामी दयानंद के वैदिक चिंतन से युवाओं को बहुधा परिचित ही नहीं करवाया जाता। वामपंथियों की यह एक सोची समझी सुनियोजित नीति है। ऐसे परिवेश में स्वामी दयानंद पर संस्कृत विभाग द्वारा गोष्ठी आयोजित किया जाना अपने आप में महत्वपूर्ण है।

गोष्ठी में वक्ता डॉ. विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ, दिल्ली थे एवं मुख्य वक्ता डॉ. शशिप्रभा कुमार, पूर्व उपकुलपति, साँची विश्वविद्यालय, भोपाल एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली द्वारा की गई। स्वामी दयानंद द्वारा भारत के स्वाधीनता संग्राम में योगदान विषय पर बोलते हुए डॉ. विवेक आर्य ने बताया कि स्वामी दयानंद के प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में अनेक स्थलों पर स्वदेशी राजा को विदेशी राज से उत्तम बताया गया है। इसके अतिरिक्त स्वामी दयानंद के जीवन चरित्रों में अनेक प्रसंग देश को स्वतन्त्र करवाने की प्रेरणा देने वाले मिलते हैं। यहाँ तक स्वामी जी के वेदभाष्य में अनेक मन्त्रों में स्वाधीन देश, स्वदेशी राजा, सदाचारी एवं प्रजापालक राजा के विधान का प्रस्ताव भी मिलता हैं। मुख्य वक्ता ने स्वामी दयानंद के नारी जाति के जनजागरण विषय पर विचार रखे गए। उन्होंने बताया कि कैसे देश स्वतंत्र होने के पश्चात् भी लड़कियों को विद्यालय में उच्च शिक्षा दिलवाने से लोग हिचकते थे। स्वामी दयानंद के समय में नारी जाति की परिस्थिति तो उससे भी विकट थी। उन्होंने कहा कि मैं संस्कृत विभाग के अध यक्षा पद से सेवानिवृत हूँ। यह स्वामी दयानंद की ही देन है। अन्यथा नारी को वेदमंत्र पढ़ने-पढ़ाने तो छोड़िये सुनने का भी अधिकार नहीं था। उन्होंने कहा कि मेरा पूरा जीवन स्वामी दयानंद के उपकारों को समर्पित है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रोफेसर रामनाथ झा JNU थे। उन्होंने मैडम ब्लावास्ट्की द्वारा स्वामी दयानंद की प्रशंसा करने के उदाहरण से अपने वक्तव्य को आरम्भ किया एवं स्वामी जी को प्राचीन ऋषियों की परंपरा का ध्वजवाहक बताया। स्वामी दयानंद पर इस कार्यक्रम का आयोजन डॉ. सुधीर आर्य, प्रोफेसर JNU द्वारा किया गया था। संस्कृत विभाग के 55 के करीब पीएचडी शोध छात्र-छात्रा स्वामी दयानंद के चिंतन को सुनने के लिए उपस्थित थे। इनके साथ-साथ प्रोफेसर बृजेश पांडेय JNU, डॉ. सत्यमूर्ति JNU, डॉ. कँवल सिंह वेंकेटेश्वर कॉलेज, डॉ. सुरेंद्र कुमार नजफगढ़, श्री योगेंद्र कुमार वधवा आदि गणमान्य विद्वान भी उपस्थित थे। शोधार्थियों ने प्रश्न-उत्तर काल में स्वामी दयानंद की मान्यताओं एवं सिद्धांतों के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछे जिनका समुचित उत्तर वक्ताओं द्वारा दिया गया। इस अवसर पर डॉ. विवेक आर्य द्वारा लिखित पुस्तक 'वेदों को जाने' का सभी शोधार्थियों में वितरण किया गया। जिससे वेदों के विषय में सम्बंधित भ्रांतियों का निवारण कर वेदों के सत्यज्ञान का प्रतिपादन हो सके। कार्यक्रम के अंत में संयोजक प्रोफेसर डॉ. सुधीर द्वारा धन्यवाद सन्देश दिया गया एवं भविष्य में भी स्वामी दयानंद एवं आर्यसमाज के सम्बन्ध में इसी प्रकार से कार्यक्रम करने का विचार प्रस्तुत किया गया। ज्ञात रहे कि वर्तमान में डॉ. प्रोफेसर सुधीर के पुरुषार्थ से JNUके पाठयक्रम में स्वामी दयानंद कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं ऋषि के वेद भाष्य को पाठयक्रम के रूप में सम्मिलित भी किया गया है। यह बड़ी उपलब्धि है।

-नरेंद्र सोनी
लेखक एवं पत्रकार, IIMC, दिल्ली

प्रेरक प्रसंग

लोग क्या कहेंगे ?

1967 ई. की बात होगी। बिहार में भयंकर दुष्काल पड़ा। देशभर से अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए अन्न भेजा गया। उन दिनों हम परिवारसहित दयानन्द मठ दीनानगर की यात्रा को गये। एक दिन श्री स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने कहा, आप पठानकोट आर्यसमाज के सत्संग में हो आवें और केरल में वैदिक धर्म के प्रचार व शुद्धि के लिए उनसे सहयोग करने को कहें।

उस वर्ष मठ की भूमि में आलू की खेती अच्छी हुई थी। मोटे वा अच्छे आलू तो काम में लाये गये। छोटे रसोई के पास पड़े थे।

हम लौटकर आये तो पता चला कि मठ में कुछ ब्रह्मचारियों ने स्वामी श्री सर्वानन्दजी से कहा, ''आलुओं का यह ढेर बाहर फेंक दें ? इसे क्या करना है ?''

श्री स्वामीजी ने इसपर कहा, ''देखो ! बिहार में दुष्काल से लोग मर रहे हैं। वहाँ खाने को कुछ भी नहीं मिल रहा। ये आलू खराब तो हैं नहीं, न ये सड़े-गले हैं। केवल छोटे ही हैं। देश के अन्नसंकट को ध्यान में रखकर हमें इन्हें फेंकना नहीं चाहिए। इनका सदुपयोग करना चाहिए। उबालकर इनका सेवन किया जा सकता है। यदि हम इन्हें फेंकेंगे तो लोग हमें क्या कहेंगे कि आश्रम के साधु ब्रह्मचारी कैसे व्यक्ति हैं ?''

इन पंक्तियों के लेखक की धर्मपत्नी ने स्वामीजी तथा ब्रह्मचारियों का यह सारा वार्तालाप सुना।

देश, धर्म व जातिसेवा में एक-एक श्वास देनेवाले एक संन्यासी के हृदय में दूसरों के लिए कितना ध्यान है, यह घटना उसका एक उदाहरण है। सच तो यह है कि संसार में धर्म की प्रतिष्ठा इन्हीं तपस्वियों के कारण है। अपने व अपने परिवार के लिए तो सब जीते हैं, धन्य हैं वे लोग जो संसार के लिए जीते हैं। पराई पीड़ को अपनी पीड़ा माननेवाले इन महापुरुषों का ऋण कौन चुका सकता है ? पराई आग में जलनेवाले इन पुण्य-आत्माओं के कारण ही ऋषिवर दयानन्द का मिशन फैला है।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सामवेद पारायण महायज्ञ एवं प्रवचन सम्पन्न

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी के 33वें वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ एवं प्रवचन 23 फरवरी से 26 फरवरी 2017 तक सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री एवं मुख्य यजमान माता चंचल मग्गो थे। वैदिक प्रवक्ता डॉ. विनय विद्यालंकार जी के प्रवचन एवं डॉ. कैलाश कर्मठ जी के सुमधुर भजन हुए।

- वेद प्रकाश, प्रधान

अग्निहोत्र महोत्सव

अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र, वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड, गुजरात के तत्वाधान में अग्निहोत्र महोत्सव 19 मार्च 2017 प्रातः 10 से दोपहर 1 बजे आयोजित किया जा रहा है। आश्रम परिसर में 12 घण्टे 365 दिन निरन्तर चलने वाले यज्ञ का आयोजन गत एक वर्ष से चल रहा है। इस यज्ञ में अब तक सहस्रों लोगों ने भाग लिया है। अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र में आकर यज्ञ के साहित्य प्राप्त किए, यज्ञ पर आधारित चलचित्र देखा तथा प्रशिक्षकों के सहयोग से अनेकों ने यज्ञ का प्रशिक्षण प्राप्त किया और यज्ञ करने का संकल्प लिया गया। *-व्यस्थापक*

गुरुकुल वैदिक आश्रम का 57वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेदव्यास, राउरकेला, ओड़िशा शिविरात्रि के शुभअवसर पर 23 से 25 फरवरी के मध्य 57वें वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया। इसके अन्तर्गत वेदपारायण महायज्ञ, वेद सम्मेलन, ऋषि बोधोत्सव एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गए। आशीर्वचन स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती परिव्राजक के हुए। *-व्यवस्थापक*

रजत जयन्ती महोत्सव

आर्य समाज सूरजमल विहार, दिल्ली का रजत जयन्ती महोत्सव 3 व 4 मार्च 2017 को आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम अन्तर्गत यजुर्वेद पारायण महायज्ञ व कथा आचार्य उदयभानु शास्त्री के ब्रह्मत्व में होगा एवं ईश वन्दना एवं भजन श्री सतीश सत्यम जी प्रस्तुत करेंगे। 5 मार्च 2017 को रजत जयन्ती महात्सव कार्यक्रम सम्पन्न होगा जिसमें विशिष्ठ अतिथि श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा एवं महामंत्री श्री विनय आर्य जी होंगे। *-अशोक गुप्ता, प्रधान*

कमाण्डेट चेतन चीता के स्वास्थ्य लाभ हेतु वेदमंत्रोच्चारण

आर्य समाज कोटा के प्रतिनिधियों ने भारत के वीर सपूत सी आर पी एफ की 92वीं बटालियन के कमाण्डेट चेतन चीता जो कश्मीर घाटी में आतंकवादियों से मुठभेड में घायल होकर एम्स दिल्ली में भर्ती हैं के घर जाकर उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना से वेद मंत्रों का सामूहिक पाठ कर दीर्घ आयुष्प होने की प्रार्थना की। इस अवसर पर आर्य समाज जिला सभा प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढ़ा ने पिता रामगोपाल से कहा कि आर्य समाज को हडौती (कोटा) के इस लाल की वीरता पर गर्व है।

-अरविन्द पाण्डेय, प्रचार मन्त्री

महर्षि दयानन्द आदर्श गौशाला का नौवां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द आदर्श गौशाला मरोड़ा, जिला नूंह मेवात हरियाणा का नौवां वार्षिकोत्सव 26 फरवरी 2017 को स्वामी शान्तानन्द वैदिक आश्रम मरोड़ा नूंह में आयोजित किया गया।

-ज्ञानचन्द्र आर्य, मंत्री

आर्य समाज एवं महिला सत्संग समिति सागरपुर द्वारा वेद कथा

आर्य समाज एवं महिला सत्संग समिति द्वारा 20 से 26 फरवरी 2017 तक नगरवन पार्क पालम रोड सागरपुर दिल्ली में संगीतमय वेद कथा का आयोजन किया गया जिसमें आचार्या सविता आर्या द्वारा वेद कथा एंव श्री बच्चू सिंह आर्य ने भजन प्रस्तुत किये। इसी कार्यक्रम के दौरान 21 फरवरी 2017 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व एवं आर्य समाज सागरपुर के सहयोग से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक गणमान्य महानुभावों के अतिरिक्त हजारों की संख्या में स्त्री-पुरुषों ने वेद कथा में भाग लिया। वेद कथा का कार्यक्रम प्रचार की दृष्टि से अत्यंत सफल रहा। इस अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश व अन्य आर्ष साहित्य कम मूल्य पर उपलब्ध कराया गया। श्रीमती विद्यावती आर्या, श्री राकेश कुमार, श्री बच्चन सिंह आर्य, श्री फूल सिंह, श्री राम सहाय, श्रीमती प्रतिभा देवी, श्रीमती कृष्णा देवी एवं श्रीमती बाल्या देवी आदि ने वेद कथा को सफल बनाने में तन-मन-धन से सहयोग किया। कार्यक्रम समाप्ति पर आर्य समाज सागरपुर के प्रधान श्री सुखवीर सिंह आर्य ने सभी विद्वानों, कार्यकर्ताओं एवं श्रोताओं का धन्यवाद किया।

-मान्धाता सिंह आर्य, मंत्री

चिकित्सा जांच शिविर सम्पन्न

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी के प्रांगण में निर्धन, वयोवृद्ध नागरिकों एवं अन्य सभी के लिये चिकित्सा शिविर का आयोजन जनवरी 2017 में किया गया। चिकित्सा शिविर का उद्घाटन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। शिविर में बी.एम.डी. जांच, ब्लड शुगर, हृदय रोग विशेषज्ञ फिजियो थैरेपी के डाक्टर, दंत रोग विशेषज्ञ, होम्योपैथिक चिकित्सक, चक्षुरोग विशेषज्ञ आदि सभी ने अपनी सेवाएं प्रदान की। शिविर में कालरा हास्पिटल ने ई.सी.जी. की सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध कराई। शिविर समापन पर प्रधान वेद प्रकाश जी ने सभी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद किया।

-सूर्य कान्त मिश्रा

रामगली आर्य समाज हरी नगर का 44वां वार्षिकोत्सव

रामगली आर्य समाज हरी नगर (घण्टाघर) का 44वां वार्षिकोत्सव 17 से 19 फरवरी 2017 को महात्मा राम किशोर वैद्य जी के सानिंध्य में श्री अशोक शास्त्री ने ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न कराया। आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री जी ने अपने प्रवचनों से श्रोताओं की ज्ञान वृद्धि की तथा श्री हरि शंकर-रमाशंकर के मधुर भजनों ने समां बांध दी। कार्यक्रम में इस वर्ष का कार्यकर्ता सम्मान श्रीमती शान्ता सोबती को भेंट किया गया। मुख्य अतिथि श्री वी.के. मोंगा को शाल द्वारा सम्मानित किया गया। दिल्ली सभा के उपप्रधान श्री शिव कुमार मदान व वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री वीरेन्द्र सरदाना जी की गौरवमयी उपस्थिति रही। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। प्रधाना श्रीमती राजेश्वरी आर्या ने सभी का धन्यवाद किया।

- श्रीपाल आर्य, मंत्री

पृष्ठ 4 का शेष

यादव रत्न), श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता, श्री मास्टर सेवाराम आर्य, श्रीमती किरण देवी, आचार्या सविता आर्या, श्री बच्चू सिंह जी को श्रीफल, पीतवस्त्र, शॉल स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र देकर महाशय धर्मपाल जी एवं श्री महाबल मिश्र जी ने सम्मानित किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्या सविता जी के ब्रह्मत्व में आयोजित भव्य यज्ञ से हुआ। यज्ञ में मुख्य यजमान श्रीमती सुमन एवं श्री रवि आर्य, श्रीमती पुष्पा एवंश्री संजय आर्य, श्रीमती प्रियंका एवं श्री हर्ष आर्य, श्रीमती कान्ता एवं श्री कमल सोनी, श्रीमती रजनी एवं श्री सूरज सोनी, श्रीमती अनीता एवं श्री जयसिंह सोनी जी रहे। यज्ञोपरान्त भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य व उनके साथी द्वारा संगीतमय यज्ञ प्रार्थना की गई तदुपरान्त महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव पर आधारित श्रेष्ठ भजनों का सिलसिला प्रारम्भ हुआ जिसे श्री संदीप आर्य एवं श्री फणीश पंवार एवं उनके सहयोगियों ने गति प्रदान की।

श्री संदीप आर्य ने अपनी मधुर आवाज में 'मेरी मां शेरों वाली है जिसके शेरों की दुनिया में शान निराली है' भजन के अन्तर्गत वीर योद्धाओं का व एक अन्य भजन के माध्यम से महर्षि दयानन्द की विशेषताओं का बड़ा ही सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया। महर्षि जी के इस जन्मोत्सव कार्यक्रम में दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम के अन्त में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य समाज सागरपुर के समस्त पदाधिकारियों का सम्मान किया गया। श्री प्रवीण राजपूत जी की ओर से ऋषिभोज की सुन्दर व्यवस्था की गई। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री शिव कुमार मदान, श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री विद्यामित्र ठुकराल, श्री विनय आर्य, श्री सुखवीर सिंह आर्य, श्री मानधाता सिंह आर्य, श्री वीरेन्द्र सरदाना, श्री राजेन्द्र लाम्बा के अतिरिक्त विभिन्न पदाधिकारियों का सहयोग प्राप्त हुआ।

-सुखवीर सिंह आर्य, प्रधान

वैवाहिक

वधू चाहिये

24 वर्षीय, अमेरिकन बैंक, मुम्बई में उच्च पद पर कार्यरत, पूर्ण शाकाहारी, आर्य परम्परा के पालक पुत्र के लिए सुयोग्य वधू चाहिए। परिवार उत्तर प्रदेश से है तथा वर्तमान में गुजरात में गांधीधाम (कच्छ) में स्थायी हैं। इच्छुक परिवार बायोडाटा मेल करें-

aryagan@aryagan.org

सूरत में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 193वीं जयन्ती

आर्य समाज मंदिर ए सी हॉल भटार रोड, सूरत में 15 से 20 फरवरी के मध्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 193वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में महायज्ञ, महायोग, महाध्यान, आयुर्वेद चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा एवं महाभण्डारे का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी, गणमान्य व्यक्तियों एवं क्षेत्रीय नागरिकों महिलाओं युवाओं व बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। *-मंत्री*

सोमवार 27 फरवरी, 2017 से रविवार 5 मार्च, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 02/03 मार्च, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 1 मार्च, 2017

प्रतिष्ठा में,

मूसलाधार बारिश भी नहीं रोक सकी आर्यवीरों की परेड

आर्यवीर दल के 88वें स्थापना दिवस पर 26 जनवरी को आर्य समाज प्रीत विहार से एक पूर्व नियोजित आयोजन के अनुसार दिल्ली के आर्यवीरों का पूर्ण गणवेश में पद संचालन (परेड) का 11 बजे का कार्यक्रम निर्धारित था। सभी आर्यवीर समय पर पहुंच गए जैसे ही ध्वजारोहण हुआ मूसलाधार वारिश शुरू हो गई लेकिन आर्यवीरों ने असीम धैर्य का परिचय देते हुए भीषण वर्षा और सर्द हवाओं मे भी कार्यक्रम का निर्विघ्न पूरा किया। डॉ. आनन्द कुमार (पूर्व आई.पी.एस.) ने राष्ट्रीय ध्वज व ठाकुर विक्रम सिंह ने आर्यवीर दल का ध्वज फहराया। आर्य समाज प्रीत विहार के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली के नेतृत्व में परेड का शुभारम्भ श्री मनोज गुलाटी ने ओ३म् ध्वज से किया। सर्वश्री मनोज गुलाटी, ऋषिराज वर्मा, ईश नारंग, रवि बादल, जितेन्द्र भाटिया, ब्रहस्पति, कीर्तिराज, दीवानजी, वीरेश आर्य, प्रेम आर्य, प्रवीण वर्मा, दिनेश जी, धर्मवीर, लक्ष्य जी, कर्ण जी, मोहित, सोनू, सुनहरी लाल यादव, अशोक गुप्ता, बंसल जी ने पूरी परेड की यात्रा आर्यवीरों के कन्धे से कन्धा मिलाकर पूरी की। पूरे मार्ग में लोग आर्यवीरों के पराक्रम को देखकर दंग रह गए और उनकी वीरता को प्रणाम करते हुए तालियां और नारों से उनका अभिनन्दन कर रहे थे। यह एक चिर स्मरणीय घटना है जिसे सभी आर्यवीर जीवन पर्यन्त याद रखेंगे।

–प्रेम आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह